कक्षा 12

# अर्थशास्त्र
# अनुपूरक पाठ्यसामग्री

## समष्टि अर्थशास्त्र – एक परिचय

(मार्च 2008 की परीक्षा के लिए)

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

प्रीत विहार, दिल्ली - 110092

# भाग 2 : प्रारम्भिक समष्टि अर्थशास्त्र

# इकाई - 6

# राष्ट्रीय आय और संबंधित समुच्चय

## आर्थिक (देशीय) सीमा की संकल्पना

राष्ट्रीय आय लेखांकन समष्टि अर्थशास्त्र की एक शाखा है और राष्ट्रीय आय तथा संबंधित समुच्चयों का आंकलन इसका एक भाग है। राष्ट्रीय आय और इससे संबंधित कोई भी समुच्चय एक देश की उत्पादन क्रियाओं का माप है। ये आर्थिक क्रियाएँ कहाँ और किसके द्वारा की जाती हैं? क्या इन आर्थिक क्रियाओं से तात्पर्य देश की सीमा में होने वाली आर्थिक क्रियाओं से है या देश की सीमा में रहने वालों द्वारा की गई आर्थिक क्रियाओं से है? ये कुछ मूल प्रश्न हैं। वास्तव में आर्थिक क्रियाओं से तात्पर्य इन दोनों से है। यहाँ एक और प्रश्न उठता है! देश की सीमा से हमारा तात्पर्य क्या राजनीतिक सीमा है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए हमें दो संकल्पनाओं का अर्थ जानना होगा: (i) आर्थिक (देशीय) सीमा और (ii) देश के निवासी। राष्ट्रीय आय लेखांकन के संदर्भ में इनके विशेष अर्थ हैं।

## आर्थिक सीमा की परिभाषा:

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार : **आर्थिक सीमा एक देश की सरकार द्वारा प्रशासित वह भौगोलिक सीमा है जिसमें व्यक्तियों, वस्तुओं और पूँजी का निर्बाध संचालन होता है।** इस परिभाषा का आधार व्यक्तियों, वस्तुओं और पूँजी के संचलन की स्वतंत्रता है। एक देश की राजनीतिक सीमा के वह क्षेत्र जहाँ सरकार को यह स्वतंत्रता नहीं है उस देश की आर्थिक सीमा में नहीं आएँगें। इसका एक उदाहरण दूतावास हैं। भारत में विदेशी दूतावासों पर सरकार को यह स्वतंत्रता नहीं है। अत: ये दूतावास भारत की आर्थिक सीमा का भाग नहीं माने जाते। प्रत्येक देश के दूतावास को उस देश की आर्थिक सीमा का भाग माना जाता है। उदाहरण के लिये भारत में अमरीका का दूतावास अमरीका की आर्थिक सीमा का हिस्सा है। इसी प्रकार अमरीका में भारतीय दूतावास भारत की आर्थिक सीमा का एक हिस्सा है।

## आर्थिक सीमा का क्षेत्र

एक देश की आर्थिक सीमा में निम्नलिखित शामिल किए जाते हैं :-

(i) देश की राजनीतिक सीमा (समुद्री सीमा और आकाशी क्षेत्र सहित)

(ii) देश के विदेशों में दूतावास, वाणिज्य दूतावास तथा सैनिक प्रतिष्ठान

(iii) देश के निवासियों द्वारा दो या दो से अधिक देशों के मध्य चलाए जाने वाले जलयान व वायुयान।

(iv) मछली पकड़ने की नौकाएँ, तेल व प्राकृतिक गैस यान जो अन्तर्राष्ट्रीय जलसीमाओं में या उन क्षेत्रों में चलाए जाते हैं जिन पर देश का अनन्य अधिकार है।

राष्ट्रीय आय समुच्चयों की दो श्रेणियाँ होती हैं : देशीय और राष्ट्रीय यानि देशीय उत्पाद और राष्ट्रीय उत्पाद। एक **देश की आर्थिक सीमा में स्थित उत्पादन इकाईयों द्वारा किया गया उत्पादन देशीय उत्पाद कहलाता है।**

## निवासी की संकल्पना

नागरिक और निवासी दो भिन्न शब्द हैं। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि एक व्यक्ति एक ही देश का निवासी व नागरिक दोनों नहीं हो सकता। इसका यह अर्थ भी नहीं है कि एक देश का निवासी उस देश का नागरिक भी होगा या एक देश का नागरिक उसी देश का निवासी भी होगा। एक व्यक्ति एक देश का नागरिक हो सकता है और किसी अन्य देश का निवासी। जो भारतीय विदेशों में रहते हैं वे भारत के नागरिक है और जिस देश में रहते हैं उसके निवासी हैं।

## निवासी की परिभाषा

**एक व्यक्ति, या एक संस्था, उस देश का निवासी कहलाता है जिस देश में रहता है, या स्थित है, व उसी की आर्थिक सीमा में उसके आर्थिक हित का केन्द्र है।**

'आर्थिक हितों का केन्द्र' में दो बातें शामिल होती हैं :- (i) वह निवासी (व्यक्ति या संस्था) उस देश की आर्थिक सीमा में रहता है (या स्थित है) और (ii) उसकी कमाने, खर्च करने और संचय करने की आर्थिक क्रियाएँ वही से होती हैं।

**एक देश के निवासियों द्वारा किया गया उत्पादन राष्ट्रीय उत्पाद कहलाता है।** यह उत्पादन चाहे उस देश की आर्थिक सीमा में किया गया हो या उससे बाहर।

इसकी तुलना में, उन सभी उत्पादन इकाईयों द्वारा किया गया उत्पादन जो एक देश की आर्थिक सीमा में स्थित है, देशीय उत्पाद कहलाता है, चाहे यह उत्पादन निवासियों द्वारा किया गया हो या गैर-निवासियों द्वारा किया गया हो।

## राष्ट्रीय उत्पाद और देशीय उत्पाद में संबंध

किसी देश की आर्थिक सीमा में किया गया कुल उत्पादन 'घरेलू उत्पाद' होता है। किसी देश के निवासियों द्वारा किया गया कुल उत्पादन 'राष्ट्रीय उत्पाद' होता है। सामान्यतया पहले घरेलू उत्पाद का आंकलन किया जाता है फिर इसमें कुछ समायोजन करके राष्ट्रीय उत्पाद का आंकलन किया जाता है। आइए, देखें ये समायोजन क्या हैं?

राष्ट्रीय उत्पाद = देशीय उत्पाद
+ देश के निवासियों द्वारा आर्थिक सीमा से बाहर किया गया उत्पादन
– देश की आर्थिक सीमा में गैर-निवासियों द्वारा किया गया उत्पादन

देश के निवासियों द्वारा आर्थिक सीमा से बाहर किए गए उत्पादन में योगदान को 'विदेशों से प्राप्त कारक आय' कहते हैं। देश की आर्थिक सीमा में गैर-निवासियों द्वारा किए गए उत्पादन में योगदान को 'विदेशों को दी गई कारक आय' कहते हैं। अत:

राष्ट्रीय उत्पाद = देशीय उत्पाद
+ विदेशों से प्राप्त कारक आय
– विदेशों को दी गई कारक आय

विदेशों से प्राप्त कारक आय और विदेशों को दी गई कारक आय के अन्तर को 'विदेशों से निबल कारक आय' कहते हैं। अत: राष्ट्रीय उत्पाद = देशीय उत्पाद + विदेशों से निबल कारक आय।

यदि विदेशों से प्राप्त कारक आय, विदेशों को दी गई कारक आय से अधिक होती है तो विदेशों से निबल कारक आय घनात्मक होगी। यदि विदेशों से प्राप्त कारक आय, विदेशों को दी गई कारक आय से कम होती है तो विदेशों से निबल कारक आय ऋणात्मक होगी।

# औद्योगिक वर्गीकरण

## परिचय

उत्पादन इकाईयों का अलग-अलग औद्योगिक समूहों या क्षेत्रकों में समूहीकरण औद्योगिक वर्गीकरण कहलाता है। राष्ट्रीय आय के आंकलन में सबसे पहले यही कार्य करना होता है। एक ही प्रकार की उत्पादन इकाईयों के समूह के राष्ट्रीय आय में योगदान का आंकलन करना प्रत्येक उत्पादन इकाई के अलग-अलग योगदान के आंकलन करने की तुलना में सरल होता है। एक देश की आर्थिक सीमा की सभी उत्पादन इकाईयों का तीन समूहों में समूहीकरण करना एक सामान्य प्रथा है। ये तीन समूह प्राथमिक क्षेत्रक, द्वितीयक क्षेत्रक और तृतीयक क्षेत्रक हैं।

## प्राथमिक क्षेत्रक

इस क्षेत्रक में उन उत्पादन इकाईयों को शामिल किया जाता है जो प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से उत्पादन करती हैं जैसे कृषि, पशुपालन, मछली पकड़ना, खनिज़ निकालना, वानिकी आदि। इनसे द्वितीयक क्षेत्रक के लिए कच्चा माल मिलता है।

## द्वितीयक क्षेत्रक

इस क्षेत्रक में वे उत्पादन इकाईयाँ शामिल की जाती हैं जो एक प्रकार की वस्तु को दूसरे प्रकार की वस्तु में परिवर्तित करती हैं। कारखाने, निर्माण, बिजली उत्पादन, जल आपूर्ति आदि इसके कुछ उदाहरण हैं।

## तृतीयक क्षेत्रक

इसे सेवा क्षेत्रक भी कहते हैं। इसके अन्तर्गत सेवाएँ उत्पादन करने वाली उत्पादन इकाईयाँ आती हैं। परिवहन, व्यापार, शिक्षा, होटल, सरकारी प्रशासन, वित्त आदि इसके कुछ उदाहरण हैं।

## राष्ट्रीय आय संबंधी समुच्चय

राष्ट्रीय आय लेखांकन में राष्ट्रीय आय संबंधी बहुत से समुच्चय होते हैं। इनके अध्ययन को सरल बनाने हेतु हम इन्हें तीन समूहों में बाँट लेते हैं :

1. देशीय व राष्ट्रीय

2. सकल व निबल

3. कारक लागत पर आंकलित और बाजार कीमत पर आंकलित

1. **<u>देशीय व राष्ट्रीय</u>** : इनके बारे में पहले विस्तार से बताया जा चुका है। ये दोनों समुच्चय सकल व निबल रूप में हो सकते हैं।

2. **<u>सकल व निबल</u>** : उत्पादन करने के लिये मशीनों आदि का प्रयोग किया जाता है। उत्पादन प्रक्रिया में मशीनों आदि की घिसावट होती है जिसे 'स्थिर पूँजी का उपभोग' या 'मूल्यह्रास' कहते हैं। उत्पादन इकाईयों को इस मूल्यह्रास के लिये प्रावधान करना होता है। यदि यह प्रावधान न किया जाए तो राष्ट्रीय आय के विभिन्न समुच्चय सकल रूप में होंगे जैसे सकल घरेलू उत्पादन और सकल राष्ट्रीय उत्पाद। यदि उत्पादन इकाईयाँ मूल्य ह्रास का प्रावधान करती हैं तो यह समुच्चय निबल कहलाते हैं जैसे निबल देशीय उत्पाद व निबल राष्ट्रीय उत्पाद। अत:

निबल देशीय उत्पाद = सकल देशीय उत्पाद – मूल्य ह्रास

निबल राष्ट्रीय उत्पाद = सकल राष्ट्रीय उत्पाद – मूल्य ह्रास

3. **<u>बाजार कीमत पर आंकलन और साधन लागत पर आंकलन</u>** : यदि देशीय उत्पाद के मूल्य का आंकलन बाजार कीमत पर किया जाता है तो इसे बाजार कीमत पर देशीय उत्पाद कहते हैं। बाजार कीमत वह कीमत है जिस पर क्रेता वस्तुएँ व सेवाएँ खरीदते हैं। इस कीमत में वस्तुओं पर लगे कर शामिल होते हैं। ये कर सरकार को हस्तांतरित कर दिये जाते हैं। इनका उत्पादन प्रक्रिया से संबंध नहीं है। यदि बाजार मूल्य पर आंकलित देशीय उत्पाद में से ये कर घटा दें तो साधन लागत पर देशीय उत्पाद निकल आएगा। इसी प्रकार सरकार कुछ वस्तुओं पर सरकारी सहायता देती है ताकि उत्पादक इन्हें कम कीमत पर उपभोक्ताओं को बेच सकें। इस प्रकार प्राप्त सहायता उत्पादकों को उत्पादन प्रक्रिया से नहीं मिली। ये उसे उपभोक्ताओं को हस्तांतरित कर देते हैं, वस्तु का बाजार मूल्य कम करके। सरकारी सहायता से वस्तुओं का बाजार मूल्य उनके उत्पादन मूल्य से कम हो जाता है। अत: साधन लागत पर देशीय उत्पाद ज्ञात करने के लिये बाजार मूल्य पर आंकलित देशीय उत्पाद में सरकारी (आर्थिक) सहायता जोड़ देते हैं। अत:

साधन लागत पर देशीय उत्पाद = बाजार मूल्य पर देशीय उत्पाद

– अप्रत्यक्ष कर

+ सरकारी सहायता (आर्थिक सहायता)

अप्रत्यक्ष कर और सरकारी सहायता के अन्तर को निबल अप्रत्यक्ष कर कहते हैं।

निबल अप्रत्यक्ष कर = अप्रत्यक्ष कर – सरकारी सहायता

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि यदि हमें किसी एक प्रकार का राष्ट्रीय आय समुच्चय ज्ञात है तो अन्य प्रकार के समुच्चय ज्ञात किए जा सकते हैं। साधन लागत पर राष्ट्रीय उत्पाद को राष्ट्रीय आय कहते हैं।

राष्ट्रीय आय = बाजार मूल्य पर सकल देशीय उत्पाद

– मूल्यह्रास

– निबल अप्रत्यक्ष कर

+ विदेशों से निबल कारक आय

## राष्ट्रीय आय और उससे संबंधित समुच्चयों के आंकलन की विधियाँ

राष्ट्रीय आय के चक्रीय प्रवाह से हमें इसके आंकलन की तीन विधियाँ मिलती हैं : उत्पादन (मूल्य संवृद्धि) विधि, आय विधि और व्यय विधि। आइए यह जाने की प्रत्येक विधि से हमें राष्ट्रीय आय के कौन से समुच्चय प्राप्त होते हैं।

### (1) उत्पादन (मूल्य संवृद्धि) विधि

इसके अन्तर्गत पहले हम प्रत्येक क्षेत्रक में बाजार कीमत पर सकल मूल्य संवृद्धि ज्ञात करते हैं और सभी क्षेत्रकों की इस मूल्य संवृद्धि का योग करने से हमें बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद ज्ञात हो जाता है। इसमें नीचे दिए गए समायोजन करके राष्ट्रीय आय ज्ञात हो जाती है :

बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद

– स्थिर पूँजी का उपभोग

---

बाजार कीमत पर निबल देशीय उत्पाद

– निबल अप्रत्यक्ष कर

---

साधन लागत पर निबल देशीय उत्पाद

+ विदेशों से निबल कारक आय

---

= साधन लागत पर निबल राष्ट्रीय उत्पाद

= राष्ट्रीय आय

### (2) आय विधि

इस विधि के अन्तर्गत पहले क्षेत्रक द्वारा किए गए कुल कारक भुगतान का आंकलन करते है। फिर तीनों क्षेत्रकों के कारक भुगतानों का योग करने से हमें 'साधन लागत पर निबल मूल्य वृद्धि' (देशीय उत्पाद) या देशीय कारक आय ज्ञात हो जाती है। फिर इसमें नीचे दिखाए गए समायोजन करके राष्ट्रीय आय ज्ञात की जाती है।

साधन लागत पर निबल मूल्य वृद्धि (देशीय कारक आय)

+ विदेशों से निबल कारक आय

---

= राष्ट्रीय आय

**<u>देशीय कारक आय (कारक भुगतान) के निम्नलिखित घटक होते हैं:</u>**

1. कर्मचारियों का पारिश्रमिक
2. किराया और रायल्टी
3. ब्याज
4. लाभ

***इन घटकों के बारे में कुछ जानकारी आवश्यक है :***

**<u>कर्मचारियों का पारिश्रमिक</u>** : इसके अन्तर्गत उत्पादकों द्वारा अपने कर्मचारियों को दी गई मजदूरी व वेतन नकद रूप में या किस्म के रूप में जैसे कि मुफ्त आवास आदि और उनके द्वारा कर्मचारियों की सामाजिक सुरक्षा योजना में अंशदान शामिल किए जाते हैं।

**<u>किराया</u>** : किराए से अभिप्राय भूमि प्रयोग करने के बदले में किरायेदार द्वारा भूमि के मालिक को किया गया भुगतान है। भूमि के अन्दर से खनिज आदि निकालने हेतु पट्टे पर भूमि लिए जाने के बदले में किया गया भुगतान 'रायल्टी' है।

**<u>ब्याज</u>** : वित्तीय परिसम्पत्ति के मालिकों को उत्पादकों द्वारा उस परिसम्पत्ति का प्रयोग करने के लिये किया गया भुगतान ब्याज होता है।

**<u>लाभ</u>** : उत्पादन इकाई के स्वामी को अन्य कारकों का भुगतान करने के बाद जो बचता है वह लाभ कहलाता है। उत्पादन इकाईयाँ इसका प्रयोग निगम कर देने में, लाभांश देने में और अवितरित लाभ के रूप में करती हैं।

विभिन्न कारकों को किए गए भुगतान की जानकारी उत्पादन इकाईयों के खातों से मिलती है। कुछ उत्पादन इकाईयाँ ऐसे होती हैं जिनके खातों से कारकों को किया गया कुल भुगतान तो ज्ञात हो जाता है लेकिन इसके प्रत्येक घटक (प्रत्येक कारक को किया गया भुगतान) को किए गए भुगतान के बारे में जानकारी नहीं मिलती। स्व: नियोजित व्यक्ति जैसे कि डाक्टर, वकील, छोटे दुकानदार आदि ऐसी उत्पादन इकाईयों के उदाहरण हैं। इनके द्वारा कारकों के कुल भुगतान को एक अलग श्रेणी में डाला जाता है जिसे 'मिश्रित आय' का नाम दिया जाता है। मिश्रित आय से तात्पर्य है सारे कारकों की इकट्ठी आय। अत:

साधन लागत पर निबल देशीय उत्पाद = कर्मचारियों का पारिश्रमिक
+ किराया व रायल्टी
+ ब्याज
+ लाभ
+ मिश्रित आय (यदि हो)

राष्ट्रीय आय लेखांकन में कारकों को किए गये भुगतान के संबंध में एक और संकल्पना का प्रयोग किया जाता है जिसे **प्रचालन अधिशेष** कहते हैं। यह लाभ, ब्याज, लगान और रायल्टी का योग है। अत:

| | | |
|---|---|---|
| साधन लागत पर निबल देशीय उत्पाद | = | कर्मचारियों का पारिश्रमिक |
| | + | प्रचालन अधिशेष |
| | + | मिश्रित आय (यदि हो) |

## ( 3 ) व्यय विधि

इस विधि के अन्तर्गत हम उपभोग और निवेश पर किए गए व्यय को जोड़ लेते हैं। यह व्यय देशीय उत्पाद पर किया गया व्यय होता है। इसके विभिन्न घटक हैं :

(i) निजी अन्तिम उपभोग व्यय

(ii) सरकारी अन्तिम उपभोग व्यय

(iii) सकल देशीय पूँजी निर्माण

(iv) निबल निर्यात (निर्यात–आयात)

इन मदों के योग से हमें बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद ज्ञात होता है। इसमें निम्नलिखित समायोजन से राष्ट्रीय आय ज्ञात हो जाती है।

| |
|---|
| बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद |
| – स्थिर पूँजी का उपभोग |
| = बाजार कीमत पर निबल देशीय उत्पाद |
| – निबल अप्रत्यक्ष कर |
| = साधन लागत पर निबल देशीय उत्पाद |
| + विदेशों से निबल कारक आय |
| = साधन लागत निबल राष्ट्रीय उत्पाद |
| = राष्ट्रीय आय |

(i) निबल देशीय स्थिर पूँजी निर्माण

(ii) स्टॉक में परिवर्तन (अन्तिम स्टॉक – प्रारम्भिक स्टॉक)

(iii) स्थिर पूँजी का उपभोग

## राष्ट्रीय आय के आंकलन में बरती जाने वाली सावधानियाँ

राष्ट्रीय आय के आंकलन में बहुत सी संकल्पनात्मक व सांख्यिकि समस्याएँ आती हैं। इसके कारण होने

वाली गलतियों को न्यूनतम करने के लिये पहले से ही कुछ सावधानियाँ बरतनी आवश्यक हैं।

## I. मूल्य संवृद्धि (उत्पादन) विधि का प्रयोग करते समय बरती जाने वाली सावधानियाँ

### (i) दोहरी गणना से बचे

मूल्य संवृद्धि ज्ञात करने के लिए उत्पादन के मूल्य में से मध्यवर्त्ती लागत घटा देते हैं। यदि हम सभी उत्पादन इकाईयों के उत्पादन के मूल्य को जोड़ेंगे तो एक उत्पादन द्वारा किया गया उत्पादन एक से अधिक बार जुड़ जाएगा। इससे राष्ट्रीय आय का आंकलन वास्तविकता से अधिक हो जाएगा। इस समस्या से निदान पाने के दो तरीके हैं : (अ) प्रत्येक उत्पादन इकाई द्वारा की गई मूल्य संवृद्धि ही जोड़ें या (ब) केवल अन्तिम उत्पादों के मूल्य की गणना करें।

### (ii) पुराने माल की बिक्री को शामिल न करें

किसी भी वस्तु का जब उत्पादन होता है तो उसे उसी वर्ष की राष्ट्रीय आय की गणना में शामिल कर लिया जाता है। प्रयोग करने के बाद उसे बेचना अर्थात् दोबारा बेचना उत्पादन क्रिया नहीं है। लेकिन यदि पुराने माल को किसी के द्वारा बेचा गया है और उसे इस सेवा के लिये कमीशन आदि दिया गया है तो यह कमीशन एक सेवा का मूल्य है और इसे राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाएगा।

### (iii) स्वःउपभोग उत्पादन को शामिल करना चाहिए

उत्पादन का वह भाग जो बेचा नहीं बल्कि स्वः उपभोग के लिये रख लिया उसे राष्ट्रीय आय का आंकलन करते समय शामिल करना चाहिए। खुद काबिज मकानों को आरोपित (estimated)किराया, किसानों द्वारा स्वयं उपभोग के लिए रखी फसल का हिस्सा आदि इसके कुछ उदाहरण हैं।

## II. आय विधि का प्रयोग करते समय बरती जाने वाली मुख्य सावधानियाँ

### (i) हस्तांतरण भुगतान या आय को शामिल न करें

राष्ट्रीय आय में कारकों के स्वामियों को उनके द्वारा उत्पादन में प्रदान की गई सेवाओं के बदले में किए गए भुगतान (जिन्हें कारक आय कहते हैं) ही शामिल किए जाते हैं। ऐसा कोई भुगतान जो किसी उत्पादन सेवा के लिए नहीं किया गया हो, हस्तांतरण कहलाता है। उपहार, दान आदि इसके कुछ उदाहरण हैं।

### (ii) पूँजीगत लाभ को शामिल न करें

पुरानी वस्तुओं और वित्तीय परिसम्पत्तियों (शेयर आदि) को बेचने से होने वाली लाभ पूँजीगत लाभ कहलाता है। इस प्रकार की आय कारक आय नहीं हैं।

### (iii) खुद-काबिज (self - occupied) मकानों का किराया शामिल करें

जब मकान मालिक अपने मकान में रहता है तो वास्तव में वह स्वयं को ही किराया देता है और यह एक सेवा के लिए भुगतान है। इसलिए इसे कारक भुगतान माना जाएगा।

**( iv ) <u>उत्पादन इकाईयों के स्वामियों द्वारा प्रदान की गई नि:शुल्क सेवाएँ भी शामिल करें</u>**

इसके मुख्य उदाहरण हैं स्वयं ही उत्पादन इकाई के लिये वित्त प्रदान करना, भवन प्रदान करना, स्वयं की सेवाएँ प्रदान करना। इन सब सेवाओं के आरोपित मूल्यों को कारक आय में शामिल करना चाहिए।

## III. <u>व्यय विधि का प्रयोग करते समय बरती जाने वाली मुख्य सावधानियाँ</u>

**( i ) <u>मध्यवर्त्ती वस्तुओं पर व्यय को शामिल न करें</u>**

इस विधि के द्वारा राष्ट्रीय आय का आंकलन करने के लिए केवल उपभोग व निवेश पर किए गए व्यय का योग किया जाता। इसे अन्तिम व्यय भी कहते हैं। मध्यवर्त्ती वस्तुओं पर व्यय को शामिल करने से दोहरी गणना हो जाएगी। कच्चे माल पर व्यय इसका एक उदाहरण हैं।

**( ii ) <u>पुरानी वस्तुओं और वित्तीय परिसम्पत्ति के क्रय पर व्यय शामिल न करें</u>**

पुरानी वस्तुएँ भूतकाल में किया गया उत्पादन है और वित्तीय सम्पत्तियाँ ना तो वस्तुएँ हैं और न ही सेवाएँ। अत: इन पर किए गए व्यय को शामिल नहीं करना चाहिए।

**( iii ) <u>स्वयं उत्पादित अन्तिम उत्पादों के स्वयं उपभोग को शामिल करना चाहिए</u>**

अपने स्वयं के मकान में रहने पर यह मान लिया जाता है कि मालिक स्वयं को ही किराया दे रहा है।

**( iv ) <u>हस्तांतरण भुगतान को शामिल न करें</u>**

उपहार, दान आदि पर किया गया व्यय किसी वस्तु या सेवा के बदले नहीं है। ये हस्तांतरण व्यय है।

# प्रयोज्य आय

## परिचय

उपभोग व्यय और बचत के लिए उपलब्ध आय को प्रयोज्य आय कहते हैं। इसमें कारक आय और हस्तांतरण (गैर कारक आय) दोनों शामिल होती है। राष्ट्रीय आय में केवल कारक आय शामिल की जाती है। यदि राष्ट्रीय आय ज्ञात हो तो प्रयोज्य आय ज्ञात की जा सकती है।

## राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

राष्ट्रीय प्रयोज्य आय से संबंधित दो समुच्चय होते है (i) सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय और (ii) निबल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = राष्ट्रीय आय
+ निबल अप्रत्यक्ष कर
+ मूल्य ह्रास
+ विदेशों से निबल चालू हस्तांतरण